International Journal of Applied Research 2017; 3(8): 44-46

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(8): 44-46
www.allresearchjournal.com
Received: 12-06-2017
Accepted: 19-07-2017

डॉ. आशुतोष नंदन
समाजशास्त्र विभाग, तिलकामांझी
भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. आशुतोष नंदन
समाजशास्त्र विभाग, तिलकामांझी
भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर, बिहार, भारत

19 वी शताब्दी में भारतीय समाज पर पश्चिमीकरण के प्रभाव

डॉ. आशुतोष नंदन

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव क्षेत्र का अध्ययन किया गया है। भारतीय संस्कृति पर दृष्टिगत पश्चिमी सभ्यता से उत्पन्न परिवर्तनों को आधुनिक भारतीय सामाजिक परिवेश में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, अतः पश्चिमीकरण के संबंध में अध्ययन करना इस बात की समीक्षा करता है कि प्राचीन भारतीय परंपरा अपनी मूल सैद्धांतिक व्यवस्था के विपरीत पश्चिमी देशों की गैर परंपरागत नीतियों से परिपूर्ण व्यवस्था की ओर अग्रसर हो रही है। इसके अतिरिक्त पश्चिमीकरण के सकारात्मक पहलू पर अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द: - पश्चिमीकरण, औद्योगिकीकरण, सांस्कृतिक मूल्य, जाति व्यवस्था, श्रीनिवास, पाश्चात्य संस्कृति

प्रस्तावना
ब्रिटिश काल से पहले भारतीय संस्कृति पूर्णरूपेण धार्मिक, आध्यात्मिक, परंपरावादी तथा भाग्यवादी थी। परंतु अंग्रेजों के संपर्क में आने से भारतीय जीवन काफी हद तक परिवर्तित हुआ। भारतीय समाज में प्राचीन धार्मिक सिद्धांतों तथा परंपराओं को अपना मूलाधार समझा गया है अर्थात भारतीय समाज एक ऐसे समाज की कल्पना करता है जिसके अंतर्गत मानव मूल्यों तथा परहित की बात हो। भारतीय समाज दिखावटी जीवन मूल्यों का पुरजोर खंडन करता है। परंतु ब्रिटिश शासन काल के दौरान भारतीय समाज पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा। जिसके परिणाम स्वरूप पश्चिमीकरण भारतीय समाज के लिए आधुनिकीकरण बनता जा रहा है। मैकाले अंग्रेजी शिक्षा के दम पर ऐसा भारतीय समाज बनाना चाहते थे जो जन्म हुआ रंग के आधार पर तो भारतीय हो, पर अन्य सभी दृष्टियों से अंग्रेज हो। ऐसे भारतीय समाज में उनके विचार काफी हद तक सत्य भी साबित हुए हैं। भारत में पाश्चात्य संस्कृति के आगमन के अनेक कारण रहे जिनमें से कुछ एक कारणों को प्रमुखता से इसका जिम्मेदार माना जाता है। पहला तो यह है कि जब अंग्रेजों ने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी को स्थापित किया तो उन्हें अपने दफ्तरों के लिए देशी लोगों की जरूरत थी जिससे उनका व्यापार निर्बाध रुप से चल सके। इस हेतु अंग्रेजों ने उन्हें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान देना प्रारंभ कर दिया। दूसरा वर्ग उन व्यापारियों का था जो अंग्रेजी शिक्षा के अथवा पाश्चात्य संस्कृति के प्रसार के कारण व्यापार करना गर्व की बात समझते थे। तीसरा वह वर्ग था जिनके लिए आधुनिक बनना या अंग्रेजी भाषा सीखना विदेशी फर्मों तथा कंपनियों में प्रशासन की नौकरी पाना आसान था। अतः इन तीनों वर्गों से भारतीय संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति का विरोध करने में असफल साबित हुई जिसका परिणाम पश्चिमीकरण की गतिशील प्रक्रिया का भारतीय समाज में प्रसार के रूप में देखी जा सकती है।
श्रीनिवास के अनुसार पश्चिमीकरण का तात्पर्य भारतीय समाज तथा संस्कृति में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से हुए परिवर्तनों से है।

श्रीनिवास के शब्दो में, "मैंने पश्चिमीकरण शब्द का व्यवहार ब्रिटिश राज के डेढ़ सौ साल के शासन के फल स्वरुप भारतीय समाज तथा संस्कृति मैं हुए परिवर्तनों के लिए किया है और वह शब्द भिन्न भिन्न स्तरों यथा प्रौद्योगिकी संस्थाओं, विचारधाराओं तथा मूल्यों पर हुए परिवर्तनों को समाहित करता है।" [1]

लिंच के अनुसार, पश्चिमीकरण में पश्चिमी पोशाक, खानपान, तौर-तरीकों, शिक्षा विधियों तथा मूल्यों को स्वीकार करना शामिल किया जाता है।

श्री हुमायूं कबीर के अनुसार," चपल यूरोपीय भावनाओ ने प्रत्येक वस्तु की सूक्ष्म परीक्षा की। एक और तो भौतिक जीवन की अवस्थाओं में परिवर्तन हो गया, दूसरी ओर विश्वासों और परंपराओं के आधारों को नष्ट कर दिया गया।"

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य भारतीय समाज पर पश्चिमीकरण के प्रभाव का आकलन करने की दृष्टि से भारतीय जाति व्यवस्था में आए आमूल चूल परिवर्तनों का विश्लेषण करना है।

भारतीय समाज तथा पाश्चात्य संस्कृति

पश्चिमीकरण ने भारतीय समाज को अपने मूल संस्कारों तथा उद्देश्यों से भटकाने का प्रयास किया है जिसके फलस्वरूप भारतीय समाज पश्चिमीकरण का पर्याय बनता जा रहा है। पश्चिमीकरण के उद्देश्यों में एक तरफ तो व्यक्ति विशेष के संस्कारिक गुणों की महता को कमतर आंका जाता रहा है वहीं दूसरी ओर व्यक्ति विशेष को अथवा उसकी महत्वता को अग्रगण्य के रूप में स्वीकार किया जाता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार दूसरों का सम्मान करना अथवा उन्हें भी बराबरी का महत्व देना सर्वोपरि माना गया है परंतु पाश्चात्य संस्कृति बिल्कुल इसके विपरीत अर्थात दिखावटी जीवन को ही अपना आधार मानती है। हमारी भारतीय संस्कृति सभी को आदर प्रेम और सदभावना सिखाती है| माता पिता का आदर करना सिखाती है| पश्चिमीकरण में आदर और प्रेम की कोई परिभाषा नही होती है| यह बडे दुख की बात है कि हमारे पूवर्जो ने हमारी संस्कृति को बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत की थी लेकिन पश्चिमीकरण के कारण हम अपनी संस्कृति को महत्व नहीं देते हैं।

सांस्कृतिक मूल्य तथा पाश्चात्य संस्कृति

पाश्चात्य संस्कृति के आगमन से भारतीय संस्कृति में मानवतावाद, लौकिक वाद तथा समानतावाद जैसे महत्वपूर्ण कारकों का प्रभाव देखने को मिला है। पश्चिमी सभ्यता के कानूनों ने भारत में जातियों के मध्य अंतराल को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है जिसके अंतर्गत ऊंची जातियां तथा नीची जातियां जैसे शब्दों के वास्तविक मानवीय अर्थों में परिवर्तन हुआ है। इन पश्चिमी कानूनों के परिणामस्वरूप हिंदू और मुस्लिम कानूनों में व्यापक परिवर्तन देखे जा सकते है। प्राचीन जाति व्यवस्था के अनुसार विद्यालयों में केवल ब्राह्मणों के के अथवा उच्च जाति के बच्चों को ही प्रवेश मिल पाता था परंतु सांस्कृतिक मूल्यों में हुए इन परिवर्तनों के कारण प्रत्येक धर्म व जाति के बच्चों को भी विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने की अवसर प्राप्त हो पाए। भारतीय सामाजिक व्यवस्था की आधार कहीं जाने वाली जाति व्यवस्था का विघटन पश्चिमीकरण की सर्वोच्च उपलब्धियों में सम्मिलित मानी गई है। जिस प्रकार भारतीय समाज में पश्चिमीकरण के दौरान उपजा औद्योगिकरण विस्तृत हो हो रहा है उसी प्रकार भारत में जातियों के मध्य प्रचलित मूल्यों का संकुचन हो रहा है। जिसके असंख्य प्रयोग उन परिस्थितियों में दिखाई पड़ते हैं जहां जातीय समूहों की व्यापकता सर्वोपरि थी। नागरिक व्यवस्था में जात-पात के बंधन ढीले पड़ रहे हैं। मंडियों बाजारों कल कारखानों होटलों रेल तथा बस आदि में जातिगत भेदभाव का प्रसार लगभग असंभव हो चुका है। पश्चिमीकरण का प्रभाव जातीय संगठनों तथा परिवार की संयुक्त प्रणाली पर सर्वाधिक देखने को मिलता है। जिसके अंतर्गत आर्य समाज, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, थियोलॉजिकल सोसाइटी, रामकृष्ण विवेकानंद मिशन जैसे समाज सुधारक आंदोलनों ने प्राचीन भारतीय जाति व्यवस्था अथवा भारतीय संस्कृति की गहनता से पड़ताल की तथा आधुनिक विज्ञान की प्रगति के दौर में तुलना की गई जिसके परिणाम स्वरूप विभिन्न जातीय समूहों में प्रचलित कुप्रथाओं जैसे बाल विवाह, सती प्रथा तथा अस्पृश्यता आदि का अंत संभव हो सका। पाश्चात्य संस्कृति में आवागमन के साधनों रेल बस गाड़ी आदि ने जातीय समूहों में प्रचलित छुआछूत अथवा अस्पृश्यता के अंतर को समाप्त कर दिया। क्योंकि सड़कों पर चलने चलने वाले इन साधनों में किसी की जात पूछ कर यात्रा करना, उठना और बैठना नहीं हो सकता था। पश्चिमी सभ्यताओं से प्रभावित भारतीय संस्कृति में महिलाओं की स्थिति का मूल्यांकन करना बेहद आसान सिद्ध हुआ है क्योंकि भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज रहा है जिसके परिणाम स्वरूप महिलाओं तथा पुरुषों में असमानता कारी विभेद मौजूद रहे। कई अध्ययन इस बात की पुष्टि कर चुके हैं कि स्त्री पुरुष की शक्ति, योग्यता, विचार, रहन सहन आदि से जुड़े अंतरों का प्रमुख कारण मौलिक अथवा प्राकृतिक नहीं है बल्कि मानव द्वारा निर्मित सांस्कृतिक परिवेश ही ही मुख्य कारण है। अतः पाश्चात्य विचारों के प्रभाव में स्त्रियों के समानता की मांग हो बल दिया जिसके अंतर्गत भारतीय महिलाओं में अंग्रेजी शिक्षा अथवा उच्च शिक्षा प्राप्त करना मुख्य रहा। [2]

जाति व्यवस्था तथा पाश्चात्य संस्कृति

भारतीय समाज मैं जाति व्यवस्था का प्रचलन प्रागैतिहासिक काल से माना गया है अतः सामाजिक स्तरीकरण का मुख्य आधार जातियां रही है परंतु पश्चिमी देशों में जातियों का कोई स्थान नहीं

है। पाश्चात्य संस्कृति में सामाजिक स्तरीकरण का आधार जातियां ना होकर वर्ग मानी गई है अतः ब्रिटिश काल के दौरान जातियों की संगठित व्यवस्था को क्षीण करने के प्रयास किए गए जिसके फलस्वरूप पाश्चात्य संस्कृति से जाति प्रथा के समस्त बंधन ढीले पड़ने लगे है। अंग्रेजी राज्य की स्थापना के फलस्वरूप अनेक राजनीतिक आर्थिक सामाजिक एवं प्रौद्योगिक शक्तियां कार्य करने लगी जिनके कारण भारत का सांस्कृतिक जीवन कई रूपों में प्रभावित हुआ। अंग्रेजों के पास राजनीतिक और आर्थिक शक्ति के अलावा एक नवीन प्रौद्योगिकी वैज्ञानिक ज्ञान तथा महान साहित्य था जिससे भारत की कुछ जातियों के लोग काफी प्रभावित हुए तथा उनका अनुसरण करना प्रारंभ कर दिया उनकी प्रथम तथा औरतों को बड़े पैमाने पर अपनाया गया अतः अंग्रेज जातीय संस्तरण की प्रणाली में सर्वोच्च शिखर पर पहुंच गए अब भारत में सबसे बड़ा जातीय समूह ब्राह्मण वर्ग का स्थान द्वितीय हो चुका था। ऐसी स्थिति में निचली जातियां, उच्च जातियों के अथवा ब्राह्मण वर्ग के तुल्य अपने जीवन को परिवर्तित करने में लगी थी वहीं दूसरी ओर उच्च जातियां अथवा ब्राह्मण वर्ग अपने संस्कार युक्त गुणों को त्याग कर अंग्रेजी सभ्यता की ओर आकर्षित हो रहे थे। इस प्रकार देश में पश्चिमीकरण की प्रक्रिया ने जन्म लिया।

श्रीनिवास ने उन जातियों की चर्चा की है जिन्होंने पश्चिमीकरण करने में अन्य जातियों का नेतृत्व किया जिनमें भारत के अधिकतर भागों में ब्राह्मण समूह उत्तर भारत में कायस्थों बंगाल में वैद्य पश्चिम भारत में पारसी और बनिए उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी भारत में कुछ मुसलमान समूह और केरल में नायर तथा सीरियाई ईसाई लोगों ने पश्चिमी शिक्षा प्राप्त की तथा अपने नवीन पेशे को अपनाया।

प्राचीन जातीय व्यवस्थाओं के स्थान पर वर्गों की व्यवस्था प्रचलन में आ चुकी है। जिसके परिणाम स्वरूप विभिन्न जातियों में रहन-सहन, खानपान, रीति रिवाज तथा परंपराओं संबंधी विभेद खत्म हो चुके हैं। कलकत्ता में जब पहला मेडिकल कॉलेज खुला तो मुर्दा चीरना अधर्म और जाति भ्रष्ट करने वाला माना जाता था। बाद में यह मान लिया गया कि मुर्दा चीरना शिक्षा की दृष्टि से बुरा नहीं है। पानी के पाइपों तथा होटलों ने खानपान में छुआछूत के विचार को बहुत कम कर दिया। डॉक्टर भगवान दास के अनुसार, " जब काशी में नल लगाए गए तो लोगों ने उनका इस आधार पर विरोध किया कि जल विभाग में ना जाने किन किन जातियों के लोग काम करेंगे और ऊंची जातियों के लोगो को उनके हाथ का पानी पीकर भ्रष्ट होना पड़ेगा परन्तु आप सभी नल के पानी का प्रयोग करते हैं। प्रारंभ में लोग अंग्रेजों द्वारा लाए आलू टमाटर आदि को खाने में भी संकोच करते थे। अब ब्राह्मण लोग आइसक्रीम बिस्किट, अंडे वाला केक आदि बेझिझक बेचते हैं। [3]

जाति व्यवस्था को शिथिल करने में पश्चिमी विचारों, आधुनिक शिक्षा, आधुनिक परिवर्तित अर्थव्यवस्था आधुनिक सामाजिक विचारधाराओ ने भी सहयोग किया है। आधुनिक समय में औद्योगिक विकास होने से भी सभी जातियों के लोग फैक्ट्रियों तथा कार्यालयों में एक साथ कार्य करते हैं जिससे उनके मध्य सामाजिक संबंधों का विकास होता है। भारतीय संविधान में भी प्राचीन जातीय व्यवस्था को समाप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है। संविधान के अनुच्छेद 17 के आधार पर छुआछूत जैसी कुप्रथा को समाप्त कर दिया गया है अब यह अपराध की श्रेणी श्रेणी में आता है। [4]

निष्कर्ष

पश्चिमीकरण का भारतीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव दिखाई दिया है पश्चिमीकरण के कारण जाति-प्रथा समाप्त हो रही है| नगरीकरण का अधिक तेजी से विकास हुआ है| अंग्रेजी शिक्षा ने अपना स्थान लिया है| अस्प्रश्यता पर अधिक प्रभाव दिखाई दिया है| स्त्रियों पर अधिक प्रभाव देखने को मिला है स्त्रियाँ अपने अधिकार को जानने लगी है| सामाजिक संरचना, विवाह की संस्था, परिवार की संस्था, रीति रिवाजों पर भी पश्चिमीकरण का प्रभाव दिखाई दिया है| अतः कहा जा सकता है कि पश्चिमीकरण का प्रभाव संपूर्ण राष्ट्र पर दिखाई देता है|

संदर्भ

1. एम एन श्रीनिवास, सोशल चेंजेस इन मॉडर्न इंडिया, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1966, पेज 47
2. रामनाथ शर्मा, राजेंद्र कुमार, 1995, भारतीय समाज, संस्थाएं और संस्कृति, अटलांटिक पब्लिशर्स, पृष्ठ 357
3. रामनाथ शर्मा, राजेंद्र कुमार शर्मा, 1996, भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक समस्याएं, अटलांटिक पब्लिशर्स, पृष्ठ 170
4. प्रवीण कुमार, करनाल में सामाजिक संस्थाएं परिवर्तन एवं विकास, International Journal in Management and Social Science 2016;4(1):पृष्ठ 473